ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-9* December-2020
Anthology : The Research

राजेन्द्र मोहन भटनागर के उपन्यासों में जीवन मूल्य

Life Value in The Novels of Rajendra Mohan Bhatnagar

Paper Submission: 15/12/2020, Date of Acceptance: 26/12/2020, Date of Publication: 27/12/2020

संजय कुमार मीणा
शोधार्थी
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
टोंक, राजस्थान, भारत

सारांश

उपरोक्त जीवन मूल्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि मूल्यों का मनुष्य के जीवन में प्रमुख स्थान है, वह सभी स्वरूपों का प्रमुख आधार स्वरूप है, जिससे मनुष्य के जीवन मूल्य बदलते है उनके अनुरूप है मनुष्य को अपना स्वभाव, रहन–सहन आदि परिवर्तित करना और वर्तमान स्वरूप के अनुसार कार्य करना।

On the basis of the above values of life, it can be said that social, economic, religious, political etc. values have a prominent place in the life of a human being, he is the main basis of all the forms, which changes the life values of a human being according to them. Change your nature, way of life etc. and work according to the present form.

मुख्य शब्द : राजेन्द्र मोहन भटनागर, आदर्शों त्याग और सत्य, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक।

Rajendra Mohan Bhatnagar, Renounce Ideals and Truth, Social, Economic, Religious, Political.

प्रस्तावना

प्रतिष्ठा का आंकलन उसके जीवन मूल्यों से किया जाता है। व्यक्ति को जीवन मूल्य सफलता के लिए जरूरी है। वैदिक काल से होते हुए गौत्तम बुद्ध और महात्मा गांधी तक अनेक महापुरूष जीवन मूल्यों के कारण इतिहास में अमर हो गए। जीवन मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं जो व्यक्ति मूल्यहीन जीवन जीते हैं वे समाज में व्यर्थ माने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए बोझ बन जाते हैं। निठल्ले व्यक्ति समाज का कभी भी मार्गदर्शन नहीं करते। मूल्यहीन व्यक्ति की जिंदगी पंगु मानी जाती है, जिसमें कोई गति या निरन्तरता नहीं होती और सिद्धान्तों के अभाव में ऐसे लोग महत्वहीन, अनुपयोगी और परिवार के लिए बोझ स्वरूप होते हैं। सिद्धान्त और मूल्य जीवन को उर्जा देते हैं। समाज हो चाहे परिवार सबका संचालन कुछ आदर्शों और सिद्धान्त से होता है। यदि जीवन में इनका अभाव हो जाये तो समाज का ढांचा गड़बड़ाने लगता है। नियम जीवन को अनुशासित करते हैं ये जीवन के आधारभूत तत्व है। अनियमित व्यक्ति जीवन के क्षेत्र में सफल नहीं माना जाता।[1]

अतः जीवन अनेक सत्यों आदर्शों और नियमों द्वारा संचालित होते हैं, इन्हीं के द्वारा जीवन मूल्य स्थापित होते हैं, संसार के अनेक महापुरूष या सफलतम व्यक्ति अपने ऊँचे आदर्शों और मान्यताओं के कारण ही समाज अपना विशेष योगदान दिया। समाज सदैव उच्च आदर्श स्वरूप लोगों का ही अनुकरण करता है। सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को कुछ मूल्य निर्धारित करने होते हैं। कल्याण और सफलता को प्राप्त करना है तो मनुष्य में मूल्यों का होना अनिवार्य है, हम समाज और राष्ट्र के लिए उपयोगी बने यही हमारी सार्थकता होनी चाहिए। इसके लिए हमें मूल्य आधारित जीने के मार्ग का चयन करना जरूरी है।

जीवन मूल्य सहज और सरल नहीं होते, इनका हमें निर्धारण करना होता है, इसके लिए त्याग और सत्य बहुत जरूरी होती है, हमें गांधी, गोखले, तिलक राममोहन राय आदि के विचार और तथ्यों से जीवन मूल्य के आदर्शों का सहज ही अनुभव होता है।[2]

अध्ययन का उद्देश्य

राजेन्द्र मोहन भटनागर के उपन्यासों में जीवन मूल्य के उद्देश्य है कि समाज में मनुष्य के भावों, आत्मा आदि को जागृत करना तथा उसके आधार पर मनुष्य को उसके जीवन को विशेष रूप से आगे बढ़ना। स्वयं के महत्व को समझाना है कि मनुष्य के जीवन का मूल्य समाज को विस्तृत स्वरूप प्रदान करता है।

जीवन मूल्य

देश–विदेश के विभिन्न दार्शनिकों, चिंतकों, इतिहासकारों, राजनीतिज्ञों, कलाकारों, वैज्ञानिकों, साहित्यकारों और आचार्यों आदि ने जीवन को अपने चिंतन का विषय बनाया है। जीवन एक साधना है, जीवन न सुखमय है, न भार रूप है। अतः मानव जीवन एक गूढ़ विषय है।

जीवन की प्रक्रिया, गतिशीलता, अनुभूति या संवेदना, आत्मपोषण, आत्मबंधन और प्रजनन।

परिभाषा

गांधी के अनुसार ''जीवन एक लालसा है'' डॉ. नगेन्द्र ''मानव जैविक घट मात्र नहीं है, वह तो चेतना की समस्त अनुभूति है''

मोहिनी शर्मा ''भारतीय संस्कृति का चरम लक्ष्य, सत्यं, शिवं, सुन्दरम् युक्त मानवीय विचारणा या चिंतन का निचोड़ ही जीवन मूल्य कहलाता है''

मूल्य का अर्थ व्युत्पति (मूल+पत्) अर्थ दिये जाने वाला धन अनादि। यह मूलतः अर्थशास्त्र का शुद्ध है, जिसका आशय मनुष्य की किसी वस्तु की इच्छा पूर्ति के बदले धन त्याग की तत्परता से उसका मूल्य निर्धारण होता है।

संदर्भ मानव मूल्यों के जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों का अध्ययन, पृ.27

मूल शब्द अंग्रेजी के टंसनम शुद्ध का अनुवाद है, जिसका अर्थ अच्छा, ठीक। अतः जो इच्छित है, वही मूल्य है।

विवेकशील व्यक्ति सदैव मूल्या वेषण में लीन रहते है। उसकी सृजनशीलता के लिए नवीन विचारों की खोज करके प्राचीन व नवीन का सामंजस्य स्थापित करते हैं।

गोविन्द चन्द्र पाण्डे ''जिस विषय को खोज का विषय होने पर विवेक का समर्थन प्राप्त होता है, वही मूल्य है''

वेदप्रकाश शर्मा ''मूल्य शुद्ध किसी भौतिक वस्तु अथवा मानसिक अवस्था के उस गुण का बोध कराता है, जिसके द्वारा मनुष्य की किसी आवश्यकता या इच्छा की तृप्ति होती है''

हेनडरसन ''कोई भी वस्तु जो मनुष्य की आवश्यकताओं को संतुष्ट करे, मूल्य कहलाती है''

गोविन्द चन्द्र पाण्डे, मूल्य मीमांसा, पृ.31,

माहिनी शर्मा, हिन्दी उपन्यास और जीवन मूल्य, पृ.3

रचनात्मक एवं सार्थक जीवन के मापक होते हैं। मूल्य का प्रभाव मनुष्य पर सदैव प्रभावित रहता है, अच्छे मूल्य ही मनुष्य की पहचान बनाते हैं।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, जब से वह संसार की गतिविधियों से सम्बद्ध होता है, समाज की प्रथम इकाई परिवार होता है, वह क्रमशः परिवार, समाज, प्रदेश, राष्ट्र और विश्व तक उन्मुख रहता है, इसके माध्यम से वह सोचता है कि वह ही नहीं संसार की बहुत बाते हैं जो उसके घनिष्ठ सम्पर्क में है, सहानुभूति, परिवार के प्रति प्रेम, गृहस्थ प्रेम, देश प्रेम आदि का विकास उसमें स्वभाविक होने लगता है। भारतीय समाज में 'पुरूषार्थ' की धारणा निहित है। सामाजिक मूल्य व्यक्ति के मोक्ष प्राप्ति के लिए भी आवश्यक है। सामाजिक मूल्यों के साथ बढ़ते गैर मूल्यों को रोका जाये और मूल्यों को सुधारा जाये।[3]

वर्तमान समय में मूल्यों का ह्रास हो रहा है और गैर मूल्य पनप रहे हैं, हमें अच्छे मूल्यों में निर्मित के लिए सामाजिक परिवेश पर विशेष ध्यान देना होगा और सामाजिक मूल्यों की रक्षा व सुरक्षा करनी होगी।

अर्थ मानव जीवन का सबसे सशक्त मूल्य है, इस युग में अर्थ युक्त व्यक्ति ही मूल्यों का ह्रास करने लगे। नये मूल्यों का विकास करने लगे, अर्थ ने समस्त नीति मूल्यों को ठुकराया है, अर्थ प्राप्ति के लिए 'रिश्वतखोरी' और स्वार्थ युक्त हो रहे हैं। अतः आर्थिक मूल्य स्वतंत्र जीवन मूल्य बनता जा रहा है।[4]

प्रत्येक देश जाति और समाज की अपनी एक संस्कृति होती है, उसी संस्कृति को आधार बनाकर मानव अपने व्यक्तित्व को अधिक विकसित करता है। वर्तमान वैज्ञानिक युग में यातायात के साधनों से भी संस्कृति मूल्यों का आदान प्रदान बढ़ा है। अतः दार्शनिक, धार्मिक, नैतिक मूल्यों में परिवर्तन होने लगा है। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से भारतीय सांस्कृतिक धारणाओं में परिवर्तन दिखाई देता है।[5] अतः हमें अपने सांस्कृतिक मूल्यों को बनाये रखने के लिए उनकी तरफ झुकना होगा, पाश्चातय संस्कृति की धारणाओं को अपनाते हुए भी हमें स्वयं की संस्कृति को आगे बढ़ाना होगा।

प्रत्येक देश में विभिन्न धर्मों में है। भारतीय संस्कृति भी इससे अछूत नहीं है, विभिन्न धर्मों के लोग भारतीय संस्कृति में निवास करते हैं, इसका प्रभाव देखने को मिलता है। परन्तु सभी धर्मों को आगे लाने के लिए हर वर्ग व समाज के धर्म की कल्पना को मानव स्वरूप में सबसे अनुरूप संरक्षण प्रदान करना होगा, अतः सभी का संरक्षण आवश्यक है।[6]

समस्त देशवासियों के कल्याण हेतु जिस नीति को अपनाया जाता है, वह नीति है। आज राजनीति के कारण मूल्य विकास की गति तेज हुई। नये–नये विचारों की धारणा इस क्षेत्र में प्रवेश करती है। मूल्य का मुख्य अर्थ मानव कल्याण होता है, परन्तु वर्तमान में राजनीति मूल्य ह्रास का प्रमुख कारण बनता जा रहा है, रिश्वतखोरी, नारी शोषण, झूंठ का सहारा जैसे मूल्य राजनीति में विकसित हो रहे हैं। अतः उपर्युक्त मूल्यों के परिवर्तन हिन्दी उपन्यास साहित्य का परिवर्तन स्वरूप दिखाई देता है।[7]

अतः वर्तमान में मूल्यों में परिवर्तन हो रहा है और प्रत्येक युग में विभिन्न कारणों से मूल्य बदलते हैं, अतः हिन्दी उपन्यासों में भी मूल्यों का परिवर्तन स्वभावित है।

प्रेमचन्द, पूर्व हिन्दी उपन्यास, पृ.3

आधुनिक काव्य के नवीन जीवन मूल्य, पृ.48

आधुनिक साहित्य में राजेन्द्र

मोहन भटनागर का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने साहित्य की अनेकानेक विधाओं को अपनी लेखनी से समृद्ध किया है कहानी, नाटक, एकांकी, बाल साहित्य और आधुनिक गद्य विष जीवनीपरख उपन्यासों में भी उन्होंने अपना परिचय दिया है।

औपन्यासिक विधा में वे समग्र जीवन को पिराते हुए कुशलता और निष्पक्ष का परिचय देते हैं। वस्तुतः साहित्य और इतिहास की परम्परा का अनुसरण करते हुए भटनागर ने जीवनीपरक उपन्यासों की रचना की है, जो ऐतिहासिक पृष्ठभूमिपर रचे जाने के बावजूद वर्तमान जीवन को आत्मसात किये हुए है। ऐतिहासिक उपन्यासों की बात की जाए तो स्पष्ट होता है कि उन्होंने इतिहास का गहन अध्ययन मनन किया है और उसे उन्होंने भली भांति उकेरा भी है और उपन्यासों पर चिंतनशील प्रकृति को अपनाया है।

जीवनीपरक उपन्यासों में उन्होंने जिन महापुरूषों के जीवन चरित्र को आधार बनाया है उनका जीवनह मारे समक्ष कथा रूप में नहीं बल्कि विभिन्न घटनाओं के रूप में प्रस्तुत किया है जिनका सामान्य जन या हमें विशेष रूप से ज्ञान भी नहीं है। विभिन्न माध्यमों से राजेन्द्र मोहन ने जीवन की ऐतिहासिकता को उपन्यासों में आधार बनाकर स्पष्ट किया है और महान पुरूषों के व्यक्ति को नखारा है और उनके व्यक्तित्व की वास्तविकता को जनसमूह के सामने प्रस्तुत किया है जो समाज को आकर्षित करते हैं।[8]

इतिहास को निष्पक्ष रूप से प्रस्तुत करने के लिए अत्यधिक सतर्कता बरतनी होती है, क्योंकि ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथ्यों व संकेतों पर आधारित होती है, राजेन्द्र मोहन भटनागर ने यह कार्य अत्यधिक सहजता व सतर्कता के साथ प्रस्तुत किया है। भटनागर ने इतिहास को इतिहास को रोचक बनाकर एक कहानी के रूप में प्रस्तुत किया है। वह बचपन से ही लेखनी को अपना आधार मानते थे, उसके साथ उनका संबंध इतना अधिक हो गया कि ''उसकी कक्षा (10) में पहली कहानी 'समाज फाँसी पर' आँसू पत्रिका में प्रकाशित हुई''[9] उस समय आँसू पत्रिका में छपने वाली कहानी उपन्यास आदि को विशेष स्तर का साहित्य माना जाता था। इस कहानी से साहित्यिक रूप में इनका संकेत स्पष्ट हो गया और साहित्यिक रूप में उन्होंने परिचय दिया। उनकी विधाओं में उपन्यास, कहानी, जीवनी आदि का विशेष योगदान है। सामयिक परिस्थितियाँ पारिवारिक एवं घरेलू संस्कार उनके जीवन और लेखन में सर्वाधिक सहायक हुए है। भटनागर को सादा जीवन उच्च विचार की उक्ति उनके जीवन पर चरितार्थ होती है।[10]

साहित्य में उनका दृष्टिकोण सर्वत्र मानवीय रहा है, उन्होंने साहित्य विद्या में मानवीकरण का चित्रण विशेष रूप से किया है, भटनागर के उपन्यास भारतीय इतिहास के व्यापक स्वरूप को धारण किये हुए हैं, इनमें मध्ययुग से लेकर वर्तमान तक राजनीतिक स्वरूप समाहित है। मध्ययुग से लेकर समकालीन वोट की प्रताप ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन विवेकानंद, गाँधीजी, जिन्ना, भीमराव अम्बेडकर, सुभाषचन्द्र बोस, सरदार पटेल, इंदिरा गांधी, सोनिया गांधी उनके उपन्यासों के नायक है। अतः उनके संपूर्ण इतिहास व ऐतिहासिक घटनाऐं उनके उपन्यासों में चित्रित है।[11]

इतिहास हास्यास्पद न बने इसके लिए उन्होंने उपन्यासों में मध्यकाल को स्थान दिया है। उसके साथ ही वर्तमान युवा की राजनीतिक, सांस्कृतिक स्वरूप दृष्टिकोण आदि का भी विशेष ध्यान रखते हुए कार्य किया है, स्वतंत्रता संघर्ष का भी गहराई से चित्रण किया है, भटनागर ने अपने जीवनी परख उपन्यासों को विशिष्ट रूप से उकेरा है। उनके शीर्षक भी विशेष रूप से विशिष्टता लिये हुए हैं। जैसे महात्मा गाँधी का जीवन चरित्र 'कुली–वैरिस्टर'[12] नामक उपन्यास में है, अली जिनन का 'कायदे आजम'[13] की उपाधि मिली थी, इसके उनकी जीवन गाथा का शीर्षक कायदे आजम में रखा गया। बल्लभ भाई पटेल को 'सरदार'[14] इंदिरा गांधी को 'इंदिरा प्रियदर्शिनी'[15] विवेकानंद के तरूण 'सन्यासी'[16] व अम्बेडकर को 'युगपुरूष अम्बेडकर'[17] से संबोधित किया गया।

उन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इतिहास व राजनीति को भी चित्रित किया है।[18] तत्कालीन मानचित्र प्रस्तुत करते हुए उन्होंने अशिक्षा और लोगों में फैली अज्ञानता का प्रस्तुतिकरण किया है। बाल विवाह, दहेज प्रथा, अशिक्षा, पर्दा प्रथा, अनमूल विवाह जैसी कुरीतियाँ तद्युगीन समाज को खोखला कर रही थी जिसे दूर करने के लिए अनेक समाज सुधार आन्दोलन चलाए गए इन आन्दोलनों की सफलता जब सामान्य भागीदारी का परिणाम की विदेशी सरकार की अवहेलना के लिए स्वतंत्रता सेनानियों ने सरकारी नौकरियाँ त्याग दी। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। इतने कठिन संघर्ष के बाद भी आधी अधूरी स्वतंत्रता प्राप्त हुई परन्तु आम आदमी की समाज की स्थिति ज्यों की त्यों रही। मात्र सरकार चलाने वाला बदल गया, जनता व शोषण वैसा ही रहा। अतः जनता की अशिक्षा अज्ञानता व शोषण के साथ–साथ उसकी विद्रोह भावना भी उनके उपन्यासों में परिलक्षित होती है। उनके उपन्यासों के आधार पर महापुरूषों की जीवनियाँ है जो कि राजनीति से जुड़े महान पुरूष है।[19] उन्होंने मुग़लों की राजनीति से लेकर स्वातन्त्रोतर भारत का राजनीतिक वातावरण का चित्र प्रस्तुत किया है। राजपूतों द्वारा मुग़लों को समर्पण न करना उनकी थान, सौर्य और देशभक्ति की थीं आज़ादी की पहली लड़ाई नामक उपन्यास के माध्यम से वे सन् 1857 की क्रांति की स्वाधीनता सग्राम का आरंभ मानते है। उनका मत है कि उस क्रांति की असफलता उसकी कमज़ोरी नहीं बल्कि भारतीय राजनीति की भजोरियों को दूर करने का प्रयास था। दक्षिणी अफ्रीका की रंगभेद की नीति को गैर–कानूनी घोषित करवाकर गांधी जी भारत में आगमन राजनीति में एक नए युग का आरंभ था। विदेशी प्रचार और डांडी यात्रा जैसे आंदोलनों ने जनता के उत्साह और स्वाधीनता संघर्ष को गति प्रदान की और स्वतंत्रता प्राप्ति को सुनिश्चित किया। वे मानते है कि गांधी और जिन्ना में मतभेद के पीछे राजनीतिक कारण रहे है। तथा अंग्रेजों की फूट डालो शासन करों की नीति ने दो देश स्थापित कर दिया।[20]

राजेन्द्र मोहन भटनागर ने केवल गांधी जी के संघर्ष को ही प्रस्तुत नही किया बल्कि सुभाष चन्द्र बोस और सरदार पटेल के संघर्ष को भी लेखनीबद्ध किया है। 'दिल्ली चलो' नेता जी सुभाष चन्द्र के जीवन पर आधारित उपन्यास है, जो भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन व उसमें नेताजी के योगदान को तटस्थ रूप में प्रस्तुत करना है।

पुरानी पीढ़ी के पाठकों के लिए यह कृति एक ऐसी स्वर्णिम प्रेरक गाया है जो उन्हें रोमांचित ही नही करती वरन् राष्ट्र की स्वतंत्रता के लिए देश–विदेश में किए गए नेताजी के कार्या कलापों की तथात्मक झांकी भी प्रस्तुत करती ह। भटनागर ने अपने उपन्यासों में गिरते मूल्यों और राजनीतिक सरोकारों की भी विवेचना की है। उन्होंने समाज में फैली कुप्रक्षाओ, राजनीतिक हस्तक्षेप अर्थभाव से जूझते व्यक्ति की मानसिकता को भी चित्रित किया है।[21]

मानव जीवन का मुख्य आधार अर्थ को माना गया है। शास्त्रों में चार पुरूषार्थो में से अर्थ का दूसरा स्थान दिया गया है। अर्थ का प्रभाव एवं महत्व समयानुसार कम नहीं हुआ बल्कि बढ़ता रहा है। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ न होने के कारण उसका संपूर्ण जीवन एक अनवरत संघर्ष बन जाता है। जिसके कारण इसकी विविध समस्याएँ जुड़ जाती है। समुचित पोषण, सुविधाजनक, आवास, रहन–सहन, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि की समस्याएँ जुड़ जाती है।

मानव के विभिन्न क्रियाकलापों में अर्थ का महत्व अधिक है। क्योंकि उसके सभी कार्यो में अर्थ की आवश्यकता पड़ती है। अर्थ को विषमताओं का और असन्तुलन का आधार भी माना जाता है। मानव संबंधों में बिखराव और सामाजिक समस्याओं का एक जटिल कारण भी अर्थ है। भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि आधारित रही है। कृषि के साथ भारतीय लघु व कुटीर उद्योगों को भी अर्थव्यवस्था का आधार माना गया। राजेन्द्र मोहन भटनागर ने अर्थ के आधार पर हो रहे अत्याचार और अन्याय का ही शब्द चित्र प्रस्तुत नही किया अपितु उसके विरूद्ध गांधी, अम्बेडकर और पटेल जैसे स्वतंत्रता सेनानियों का विद्रोह भी प्रदर्शित किया है। अशिक्षा ने भी भारत को जकड़ा हुआ था। उपन्यासकार न केवल स्वतंत्रता पूर्व का चित्र प्रस्तुत नही किया बल्कि स्वतंत्रता पश्चात् की अर्थ केन्द्रित मानसिकता को भी प्रस्तुत किया है। ''अन्तिम सत्याग्रही नामक उपन्यास इसी मानसिकता का परिचायक है।''[22]

आर्थिक उन्नति के लिए किए गए प्रयासों के साथ भ्रष्टाचार का भी जन्म हुआ। भ्रष्टाचार आज के भारत की ज्वलंत समस्या है और अधिकांश नेता स्वाधीनता पश्चात् निरन्तर फैलते भ्रष्टाचार यथार्थकन किया है। जिन लोगों ने स्वाधीनता प्राप्ति में देश की मदद की थी वही आज़ादी के पश्चात् भ्रष्टाचार करने के लिए विवश हो गए थे। इसके साथ–साथ उन्होंने निरन्तर बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी, लघु कुटीर उद्योगों का पतन व बहु राष्ट्रीय कम्पनियों के विस्तार का दृष्टिपात किया है।

धर्म सामाजिक तथा सांस्कृति गतिविधियों का मूलाधार है। संस्कृमि एक जीवन शैली है जो व्यक्तित्व को परिष्कृत एवं समृद्ध बनाती है। वैवाहिक रीति–रिवाज, धार्मिक, संस्कार भारत में विभिन्न रूपों में विद्यमान है। भारतीय समाज अज्ञानता संकीर्ण विचारों एवं धार्मिक संस्कारों के कारण आज भी अंधविश्वासों में जकड़ा हुआ है।[23]

तद्युगीन समाज में धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का भी हास होने लगा। अपने संस्कारों के कारण अलग पहचान रखने वाला भारत अत सांस्कृतिक रूप से भी पिछड़ने लगा। भारतीय समाज की परम्पराएँ एवं रूढ़ियाँ समाज की प्रगति की सबसे बड़ी बाधक बनती रही। इसके अतिरिक्त जातिगत भेदभावों ने तद्युगीन समाज और संस्कृति को विभाजित किया हुआ था राजेन्द्र मोहन भटनागर ने अपने उपन्यास साहित्य में भारत की धार्मिक व सांस्कृतिक स्थिति को भी चित्रित किया है। ''उन्होंने अपने 'युग पुरूष अम्बेडकर' नामक उपन्यास में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के संघर्ष को दृष्टिगोचर किया है।''[24] अम्बेडकर जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने कड़े संघर्ष के बाद इस छुआछुत जैसी दीमक को गैर–कानूनी घोषित करवाया। जब समाज से नैतिकता और आध्यात्मिका लुप्त हो रही थी उस समय विवेकानन्द ने अपने आध्यात्मिक विचारों व ज्ञान से विदेशों में भारत की आध्यात्मिकता व हिन्दू धर्म का परिचय फहराया।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह कहना अत्युक्ति न होगी कि राजेन्द्र मोहन भटनागर हिन्दी कथा–साहित्य के ऐसे उपन्यासकार है। उन्होंने जीवनीपरक उपन्यासों में इतिहास के व्यापक फलक को समेटते हुए सजीवतापूर्ण वर्ण से ऐतिहासिक घटनाओं का जीवत शब्द चित्र प्रस्तुत किया है। इतिहास को निस्पक्षता के साथ प्रस्तुत करना एवं कौशल है। इसे भटनागर ने अत्यन्त कुशलता और निस्पक्षता से लेखनीकार किया है और अपने उत्तरा–दायित्व का पूर्ण रूप से निर्वाह किया है।[25]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *आज़ादी की पहली लड़ाई (रानी लक्ष्मी बाई पर), सुनील साहित्य सदन दिल्ली संस्करण–1977 पृ. 26*
2. *इन्दिरा प्रिय दर्शिनी (इन्दिरा गांधी पर)–राजेन्द्र मोहन भटनागर गाडोदिया पुस्तक भण्डार, बीकानेर, संस्करण 1986 पृ. 37*
3. *एक अंतहीन युद्ध (महाराणा प्रताप), किताब घर प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 1985 पृ.68– राजेन्द्र मोहन भटनागर*
4. *अन्तिम सत्याग्रही (महात्मा गांधी का नमक आंदोलन) सन्मार्ग प्रकाशन दिल्ली संस्करण 1997 पृ. 45 – राजेन्द्र मोहन भटनागर*
5. *कायेद आजत्रम (जिन्ना) नेशनल पल्लिथिंग हाउस, नई दिल्ली संस्करण 2006 पृ. 62– राजेन्द्र मोहन भटनागर*
6. *कुली बैरिस्टर (महात्मा गाँधी दक्षिणी अफ्रीका यात्रा पर) राजपाल एण्ड सन्द दिल्ली संस्करण 2007 पृ. 47– राजेन्द्र मोहन भटनागर*
7. *तरूण सन्यासी (विवेकानन्द) विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी संस्करण 2001 पृ. 85 राजेन्द्र मोहन भटनागर*
8. *दिल्ली चल्लो (सुभाष चन्द्र बोस) राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली संस्करण 2010 पृ. 47 – राजेन्द्र मोहन भटनागर*
9. *दंश (द्रोणाचार्य और एक लव्य) राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली संस्करण 2010 पृ. 124– राजेन्द्र मोहन भटनागर*

10. *नीले घोड़े पर सवार (महाराणा प्रताप) राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली संस्करण 1984 पृ. 141 – राजेन्द्र मोहन भटनागर*
11. *परछाइयाँ (सोनिया गाँधी) नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली संस्करण 2006 पृ. 126 – राजेन्द्र मोहन भटनागर*
12. *मगरी मानगढ़ (गोविन्द गिरी) राणी प्रकाशन, दिल्ली संस्करण 2011 पृ. 142 – राजेन्द्र मोहन भटनागर*
13. *युग पुरूष अम्बेडकर (डॉ. भीमराव अम्बेडकर) राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली संस्करण 1984 पृ. 161– राजेन्द्र मोहन भटनागर*
14. *राज राजेश्वर (महाराणा कुम्भा) राजपाल एण्ड सन्स दिल्ली संस्करण 1992 पृ. 131– राजेन्द्र मोहन भटनागर*
15. सरदार (वल्लभ भाई पटेल) राजपाल एण्ड संघ दिल्ली संस्करण 2002 पृ. 57– राजेन्द्र मोहन भटनागर